'हिंदी, अंग्रेजी भी सीखें, पर बात अपनी बोली में करें'

अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मेलन में साहित्यविद महेंद्र मिश्र ने कही बात

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायपुर : गोंड जनजाति के बच्चे भी गोंडी की जगह हिंदी बोलते हैं। इस वजह से गोंडी भाषा के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। हिंदी, अंग्रेजी व अन्य भाषा सीखना और बोलना गलत नहीं हैं। समाज में रहने के लिए इन बोलियों को जानना जरूरी है, लेकिन आपस में हमे अपनी भाषा-बोली पर ही बातचीत करना चाहिए। ये बातें लोक साहित्यविद महेंद्र कुमार मिश्र ने कही। सिविल लाइन स्थित न्यू सर्किट हाउस में साहित्य अकादमी नई दिल्ली और साहित्य अकादमी, छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद की ओर से दो दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में बीज वक्तव्य रखते हुए महेंद्र मिश्र ने आगे कहा कि आदिवासी लोकगीत और साहित्य स्वदेशी जान, सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय ज्ञान का एक जीवंत और गतिशील संग्रह है। छत्तीसगढ़ में, गोंड, भतरा, बैगा, उरांव, हलबा, दुरुआ, पंडो, पहाड़ी कोरवा और कमार जैसे विविध आदिवासी समुदायों के साथ, ये परपराएं स्थानीय विरासत को संरक्षित करने में एक आधारभूत भूमिका निभाती हैं।

दो दिवसीय सम्मेलन की शुरुआत करते अतिथि। • आयोजक

साहित्यकारों को समाज के विषय में लिखना चाहिए : साहित्य अकादमी नई दिल्ली के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादमी का कार्य साहित्यकारों को समाज के विषय में लेखन करने के लिए जगाना है। जनजातीय बोलियों में वाचिक परंपराओं में संरक्षित संस्कृति को लिखने की आवश्यकता है। साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष शशांक शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ में ग्राम्य और अरण्य संस्कृति और परंपरा के मूल तत्व एक हैं, अलग अलग भाषा में व्यक्त होने के कारण समझ बदल जाती है। इन वाचिक परंपराओं को लिखने से एक दूसरे समाज के प्रति समझ बढ़ेगी और एकात्म का भाव जागेगा।

'जनजातीय भाषाएं और बोलियां प्राकृतिक रूप से जन्म लेती हैं'

दूसर सत्र में डा. रामकोटि पवार, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के प्रोफेसर ने संस्कृति संरक्षण में जनजातीय भाषाओं का महत्व विषय पर बोलते हुए कहा जनजातीय भाषाएं और बोलियां प्राकृतिक रूप से जन्म लेती हैं। शास्त्रीय भाषाएं जनजातीय बोलियों पर दबाव डाल रही हैं, इस कारण जनजातीय बोलियों में परिवर्तन हो रहा है। मातृभाषा से ही बहुभाषा की ओर जाएंगे। भारत में पिछले 60 वर्षों में 200 भाषाएं और स्थानीय बोलियां लुप्त हो गई और 150 लुप्त होने की स्थिति में है। मध्य प्रदेश की माघुरी यादव ने कहा, जनजाति संस्कृति सभी जानकारियां वाचिक परंपरा में है, इसे लिखने से जनजातियों की ज्ञान परंपरा को समझने में मदद मिलेगी। संस्कृति विभाग के संचालक विवेक आचार्य ने कहा कि बोलियां शिक्षा, धर्म और समाज के बारे में बताती हैं।